JURJ

Jagannath University
Jaipur | Rajasthan

Jagannath University Research Journal (JURJ) Volume No. VI , Issue No.II, Nov., 2025, ISSN: 2582-6263

विद्यार्थियों के आध्यात्मिक एवं नैतिक चरित्र निर्माण में वैदिक शिक्षा का महत्व

Dr. Praveen Pathak*
Assistant Professor, Department of History*
Starex University, Gurugram,Haryana*
Corresponding Author Email: praveenpthak@gmail.com

सारांश: वैदिक सभ्यता विश्व की पुरानी सभ्यताओं में से एक है। वैदिक सभ्यता ने एक ओर प्राचीन सभ्यता का दर्शन करवाया वहीं दूसरी तरफ वैदिक सभ्यता ने विश्व को वैदिक शिक्षा के माध्यम से प्रकाशित किया। वैदिक शिक्षा चार हज़ार वर्षों से निरंतर प्रगति के पथ पर बढ़ती जा रही हैं। भौतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान तथा विभिन्न उत्तरदायितत्वों के निर्वाह के लिए शिक्षा के महत्व को सदा स्वीकार किया। वैदिक युग से ही इसे प्रकाश का पुंज माना गया जो मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों को अवलोकित करते हुए सही पथ की ओर अग्रसर है। वैदिक ऋषियों का मानना था कि शिक्षा द्वारा प्राप्त एवं विकसित की गयी वृद्धि ही मनुष्य की वास्तविक शक्ति होती है। वैदिक शिक्षा उस धन की भांति है कि इसे न चोर चुरा सकता है, न बाट सकता है, न छीन सकता है। वैदिक शिक्षा ऐसा प्रकाश पुंज है जो व्यव करने पर भी बराबर बढ़ता है। विद्या-संबंधी समस्त गुणों का निरूपण करने के बाद वैदिक ऋषियों ने वैदिक शिक्षा को सर्वोत्तम बताया हैं। प्राचीन भारतीयों की दृष्टि में शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीक विकास का साधन थी। वैदिक शिक्षा मात्र पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करना नहीं था अपितु मनुष्य के अध्यात्म एवं स्वास्थ्य का भी विकास करना था। वैदिक ऋषियों ने इसी को ध्यान में रखकर वैदिक शिक्षा का निर्माण किया। वैदिक शिक्षा विद्यार्थी को व्यक्तित्व के विकास का पूरा अवसर प्रदान करता है। भारतीय नीति निर्माताओं ने व्यक्तित्व को दबाने का कभी प्रयास नहीं किया। यह विद्या मनुष्य को सांसारिक जीवन की कुशलताओं में पूर्ण करके उसे जीवन यापन में मदद करती थी, पर वैदिक शिक्षा का दीर्घगामी लक्ष्य था। मनुष्य के आध्यात्मिक जीवन की तैयारी, जिसके लिए उसे "परा विद्या" का अध्ययन करना होता था।

Copyright © JURJ

बीज शब्द- वैदिक सभ्यता, गुरुकुल, वैदिक शिक्षा, भारतीय समाज, हिन्दू संस्कृति

1. प्रस्तावना

वैदिक शिक्षा का विश्लेषण

वैदिक शिक्षा व्यवस्था सामाजिक और सांस्कृतिक तत्वों का सम्मिश्रण कहा जाता है। यह आर्य संस्कृतियों का संश्लेषण है। इस संश्लेषण के बाद वैदिक शिक्षा में नैतिकता, अध्यात्मिकता, सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था का अंश पायी जाती है। प्राचीन काल से आज तक भारतीय समाज की सामाजिक और सांस्कृतिक निरंतरता वैदिक शिक्षा के द्वारा पोषित हुई। वैदिक काल से लेकर सिंधु सभ्यता, बौद्ध, जैन, इस्लाम और ब्रिटिश शासन से लेकर वर्तमान काल तक वैदिक शिक्षा व्यवस्था निरंतर प्रगति के रास्ते पर अग्रसर होती रही है। वैदिक शिक्षा संस्कृति तत्वों के विचारों, धारणाओं, शिष्टताओं का एक प्रकाश पुंज है जो भारतीय सभ्यता को हजारों सालों से प्रकाशित करते आ रहा है। वैदिक शिक्षा विचारों का सम्मिश्रण, आचार व्यवहार, एकरूपता, परम्पराओं और आदर्शों पर आधारित होते हैं। वैदिक शिक्षा हिन्दू संस्कृति की जीवन-पद्धति रही है, वैदिक शिक्षा पर बाहरी संपर्क होने के बावजूद भारतीय गुणों और विचारों को संरक्षित रखते हुये मूलत: "भारतीय" बनी रही। वैदिक शिक्षा में सिर्फ नैतिकता, अध्यात्मिकता, सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था के गुण नहीं पाये जाते बल्कि साहित्य, कला और वास्तुकला के गुण दिखाई देते हैं। भारत में धार्मिक और सामाजिक सहिष्णुता की धारा रही हैं। इस परंपरा को वैदिक शिक्षा व्यवस्था ने आगे बढ़ाया। भारत में सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन पद्धति में समृद्धि और विविधिता लाने में योगदान किया है।[1]

शोध अध्ययन का उद्देश्य

1. वर्तमान भौतिकवादी शिक्षा में वैदिक शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालना।
2. वैदिक शिक्षा वर्तमान युवा के चंचल मन को नियंत्रिय करने का ज्ञान देती है।

Copyright © JURJ

3. वैदिक शिक्षा के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों को दूर किया जा सकता है।

शोध अध्ययन पद्धति

1. गुणात्मक पद्धति

शोध सीमा

1. वैदिक शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालना।

शोध अध्ययन सामग्री

द्धितीयक स्रोत

वैदिक शिक्षा प्रणाली का नामकरण

वैदिक काल को दो भागों में विभाजित किया जाता है। वैदिक शिक्षा की दृष्टि से वैदिक काल और उत्तर वैदिक काल के रूप में विभाजित करते है। वैदिक शिक्षा प्रणाली के नाम को लेकर कई अलग-अलग मत है वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली को ब्रहमीण शिक्षा प्रणाली कहते है। वैदिक शिक्षा प्रणाली के निर्माण में हिंदुओं के प्रमुख भूमिका थी इसलिए इसे हिन्दू शिक्षा प्रणाली से भी संबोधन करते हैं। लेकिन अधिकांश प्रबुद्ध जनों का मानना है कि इसे वैदिक शिक्षा के नाम से ही सम्बोधन करना उचित होगा।

वैदिक शिक्षा के स्थल

तक्षशिला, पाटलिपुत्र, मिथिला, धार, कन्नौज, नासिक, कर्नाटक, काँची, मिथिला, उज्जैन, प्रयाग, कैकय, तन्जौर तथा. मालखण्ड आदि अनेक स्थान शिक्षा के लिए प्रसिद्ध थे ।

वैदिक शिक्षा की विषय वस्तु

वैदिक काल में शिक्षा का मुख्य पाठ्यक्रम वैदिक साहित्य का अध्ययन करना था। वैदिक ग्रन्थों के अध्ययन के अलावा इतिहास, पुराण, खगोल-विद्या, छंदशास्त्र, ज्यामिती, उपनिषद, सूत्र का अध्ययन पर बल दिया जाता था। इसके अलावा छः वेदांगों – शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरक्त, छंद तथा ज्योतिषी साथ में दर्शन, धर्मशास्त्र, महाकाव्य, मूर्तिकला, पोतनिर्माण, वैद्यक की शिक्षा प्रदान की जाती थी। स्नातक वेदों तथा 18 शिल्पों में निपुण होते थे। जो निम्नलिखित है।

गायन ,वादन, चित्रकला, गणित, नृत्य, गणना, यंत्र, मूर्तिकला, कृषि, पशुपालन, वाणिज्य, चिकित्सा, विधि, प्रशासनिक, धनुर्विद्या, जादूगरी, सर्पविद्या, अज्ञात धन का पता लगाना[2]

Copyright © JURJ

प्राचीन भारतीय साहित्य तथा विदेशी यात्रियों के विवरण से पता चलता है कि यहाँ शिक्षा के पाठ्यक्रम में चार वेद, छः वेदांग, 14 विधायें, 18 शिल्प, 64 कलायें आदि सम्मलित थे। 14 विधाओं में चार वेद, 6 वेदांग, धर्मशास्त्र, पुराण, मीमांसा तथा तर्क है। वैदिक युग में शिक्षा मौखिक होती थी। तथा पवित्र ग्रन्थों के मंत्रों को कंठस्थ करने पर बल दिया जाता था। पुरोहित वर्ग के लोग मंत्रों को याद कर लेते थे। सिर्फ मंत्रों को याद नहीं किया जाता था इन मंत्रों के अर्थ और व्याख्या पर भी बल दिया जाता था। निरक्त में ऐसे लोगों की निंदा की गयी है जो मंत्रों की व्याख्या जाने बिना उसको याद करते है। वेदों के वैदिक मंत्रों के शुद्ध उच्चारण पर बल दिया जाता था। विद्यार्थी वेदों के साथ विभिन्न प्रकार के साहित्य का भी अध्ययन करते थे। जिसमें पतंजलि के महाभाष्य, पणनी का व्याकरण, अमरकोश, मनुस्मृति, काव्य प्रकाश जैसे ग्रंथो का अध्ययन किया जाता था।

वैदिक शिक्षा प्रणाली

वैदिक शिक्षा की व्यवस्था करना राज्य का उत्तरदायित्व नहीं था। उस पर राज्य का कोई नियंत्रण नहीं था। वैदिक कालीन शिक्षा पूर्ण रूप से ऋषि, मुनियों, गुरुओं के नियंत्रण में होती थी। वैदिक कालीन शिक्षा पूर्ण रूप से निः शुल्क होती थी। लेकिन शिष्य अपनी क्षमता के अनुसार गुरुओं को दान -दक्षिणा देते थे। वैदिक काल में गुरुकुलों को राज्य की तरफ से कोई निश्चित आय प्राप्त नहीं होती थी। उस समय के राजा, महाराजा, प्रजा और समाज के धनी लोग गुरुकुलों को स्वेच्छा से अन्न,वस्त्र, मुद्रा, भूमि, पशु भेंट करते थे। इस सहायता से गुरुकुलों के माध्यम से वैदिक शिक्षा का पोषण होता था। वैदिक काल में प्रारम्भिक शिक्षा की व्यवस्था परिवार से शुरू होती थी। बाल्यावस्था में बच्चों का विद्यारम्भ किया जाता था। बच्चे को स्नान कराकर नए वस्त्र पहनाकर पुरोहित के सम्मुख लाया जाता था। इसके बाद वेद मंत्रों द्वारा देवताओं की आराधना की जाती थी।[3] वैदिक काल में उच्च शिक्षा की व्यवस्था गुरुकुलों में होती थी। 8 से 12 वर्ष की आयु पर बच्चों का गुरुकुलों में प्रवेश होता था। गुरुकुलों में प्रवेश के समय

Copyright © JURJ

बच्चों का उपनयन संस्कार होता था। वैदिक काल में शिक्षा शब्द का प्रयोग ज्ञान, विनय, विद्या और अनुशासन के पर्याय के रूप में किया जाता था। डॉ अलटेकर के शब्दों में वैदिक कालीन शिक्षा 'ईश्वर भक्ति तथा धार्मिकता की भावना, व्यक्तित्व चरित्र का निर्माण, सामाजिक और नागरिक मूल्यों का निर्माण सामाजिक कुशलता की उन्नति और राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण एवं प्रसार, प्राचीन संस्कृति परंपरा का संवाहक हैं। वैदिक शिक्षा के उद्देश्य आदर्श थे। प्राचीन काल की शिक्षा ज्ञान का पर्याय के रूप में लिया जाता था। उस काल की शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान का विकास, राष्ट्र के प्रति कर्तव्य का पालन और राष्ट्रीय संस्कृति का निर्माण पर विशेष बल दिया जाता था।

वैदिककालीन ऋषि और गुरुओं की मान्यता थी कि मनुष्य जीवन का अंतिम उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना है और इस मोक्ष प्राप्ति के लिए आवश्यकता निर्मल मन की होती है। यही कारण है वैदिककालीन ऋषि मुनियों ने शारीरिक स्वास्थ्य, इंद्रियों पर नियंत्रण और संवर्धन पर विशेष बल दिया। उचित आहार-विहार एवं आचार-विचार की शिक्षा दी जाती थी। वैदिककालीन शिक्षा की दिनचर्या प्रातः दातुन, स्नान, व्यायाम, सादा भोजन, गुरु की सेवा से शुरू होता था। शिष्यों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए उन्हें उचित आचार-विचार की ओर उन्मुख किया जाता था; छात्रों को सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य को ग्रहण करने और काम, क्रोध, लोभ, मोह भय पर नियंत्रण करने के गुणों का ज्ञान कराया जाता था।[4] वैदिक शिक्षा व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करते है। भारतीय शास्त्रों में सच्चरित्रता को बहुत अधिक महत्व दिया गया है। वैदिक शिक्षा उस जौहरी के समान है जो शिक्षा को आभूषण मे परिवर्तित करके, मनुष्य को सुज्जजित करती है। मनुस्मृति में वर्णित है कि 'सभी वेदों का ज्ञात भी सच्चरित्रता के अभाव में में श्रेष्ठ नहीं है, सत्कर्मों से ही चरित्र का निर्माण संभव है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य ज्ञान तथा शक्ति प्राप्त करता है उससे नैतिक गुणों का उदय होता है। मनुष्य को सन्मार्ग का अनुसरण करने की प्रेरणा प्राप्त होती है। वैदिक ऋषियों ने इसी को ध्यान में रखकर वैदिक शिक्षा का निर्माण किया। वैदिक

Copyright © JURJ

शिक्षा विद्यार्थी को व्यक्तित्व के विकास का पूरा अवसर प्रदान करता है। भारतीय नीति निर्माताओं ने व्यक्तित्व को दबाने का कभी प्रयास नहीं किया। परंतु कुछ आलोचकों का कहना है कि वैदिक शिक्षा का कठोर अनुशासन छात्रों के व्यक्तित्व को दबा देता है जिससे उनका समुचित विकास नहीं हो पाता है। इस प्रकार की अवधारणा एक पक्षीय है वैदिक शिक्षा विद्यार्थी को अनुशासन का पाठ पढ़ा के इंद्रियों पर कठोर नियंत्रण करने का गुर सिखाती है ताकि विद्यार्थी जीवन के लक्ष्य को समझ सके।[5]

वैदिक शिक्षा पद्धति विद्यार्थी में बौद्धिक विकास के साथ-साथ शारीरिक विकास का भी पूरा ध्यान रखा गया था। 'स्वस्थ मस्तिष्क का वास स्वस्थ शरीर में होता है' यह धारणा प्राचीन चिंतकों की मान्य थी। वैदिक शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी में आत्म-सम्मान, आत्म-विश्वास, आत्म-संयम, विवेक-शक्ति आदि गुणों का उदय होता था जो उसके व्यक्तित्व को विकसित करने में सहायक थे। वैदिक शिक्षा के माध्यम से उसके कर्तव्यों के निर्वाह तथा लक्ष्य की प्राप्ति करने में मदद मिलती है। अग्नि से आशीर्वाद लिया जाता है कि उसे बुद्धि एवं शक्ति प्रदान करे। सविता उसकी शारीरिक बाधाओं को दूर करे। इस वैदिक शिक्षा के माध्यम ब्रह्मचारी भविष्य के प्रति आश्वत होकर पूरी निष्ठा से अपने कर्तव्यों का निर्वाह करता है। भविष्य-जीवन की कठिनाइयों का भय उसे कर्तव्य-पथ से विचलित नहीं कर सकता है। विद्यार्थी को ज्ञान कराया जाता है कि वह अपनी जाति एवं देश की संस्कृति का रक्षक है। संस्कृति का विकास तभी संभव है जबकि वह अपने कर्तव्यों का नियमपूर्वक पालन करे। वैदिक शिक्षा के माध्यम से शिक्षित विद्यार्थी का मान-सम्मान राजा-महाराजा भी करते है।

वैदिक शिक्षा आत्म-संयम एवं अनुशासन की प्रवृतियाँ भी व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक होती थी। उसे अपने इंद्रियों की प्रवृतियों पर नियंत्रण रखना पड़ता है। आहार, विहार, वस्त्र, आचरण आदि सभी को उसे नियमित करना होता था। गीता में कहा है कि 'यथायोग्य आहार-विहार करने वाले, कर्मों में यथायोग्य

Copyright © JURJ

प्रयास करने वाले, यथायोग्य शयन करने वाले तथा यथायोग्य जगाने वाले व्यक्ति के लिये ही योग दुःखों का विनाशक बनता है।[6]

गुरुकुल पद्धति

अधिकांश शिक्षा गुरुकुल में प्रदान की जाती थी। इसमें विद्यार्थी अपने घर से दूर गुरु के निवास पर रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। शिष्य गुरुकुल में गुरु की सेवा के माध्यम से ज्ञान प्राप्ति करते थे। वैदिक ऋषियों ने गुरु के साथ विद्यार्थी के सान्निध्य के महत्व को समझा था और इसी कारण गुरुकुल पद्धति पर बल दिया । गुरु के चरित्र तथा आचरण का शिष्य के कोमल मन पर सीधा प्रभाव पड़ता था तथा उसका अनुकरण करता था।

निष्कर्ष

वैदिक शिक्षा ने राष्ट्रीय विरासत तथा संस्कृति के प्रचार,प्रसार और सुरक्षा प्रदान करने में अनुकरणीय कार्य किया है। इसी कारण हजारों वर्षों पश्चात् भी यह अपनी अमिट छाप मानव मात्र पर छोड़ती है। वैदिक ऋषियों ने विद्यार्थी की प्रवृतियों एवं भावनाओं को अनावश्यक दबाने का प्रयास नहीं किया। वैदिक शिक्षा के माध्यम आत्म-नियंत्रण एवं आत्मनुशासन से उनका तात्पर्य यथोचित एवं आहार,विहार, निद्रा, शयन आदि से था। इससे विद्यार्थियों के चंचल मन को नियंत्रित होने से बचाया जाता है। शिक्षा

वैदिक शिक्षा विद्यार्थी सामाजिक कर्तव्यों का बोध कराकर उसे नागरिक बनाना भी था। सत्य बोलना, धर्म का आचरण करना, आलस्य न करना, सत्य मार्ग से विचलित मत होना, धर्म के मार्ग से विचलित न होना। माता को देवी मानना, आचार्य को देवता मानना, अध्ययन की उपेक्षा न करना, अच्छे कार्यों का अनुसरण करना, दोष रहित कार्यों से दूर बने रहना। जो कुछ करना, श्रद्धा, विश्वास, आनंद, विनम्रता, भय तथा दयालुता।[7] आदि भारतीय समाज में वैदिक शिक्षा ने प्राचीन पीढ़ियों की सर्वोत्तम परम्पराओं को सुरक्षित बनाये रखने तथा उसके प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया।[8]

Copyright © JURJ

का रूप व्यक्तिगत था। 'नारी' को शिक्षा में स्थान दिया गया था। प्राचीन शिक्षा सहिष्णु थी। प्रायः छात्रों का जीवन कठोर होता था। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना था। गुरु गृह एवं आश्रम ही शिक्षा के केन्द्र थे। छात्रों की दिनचर्या का स्वरूप सात्विक था। यही कारण था कि शिक्षा की प्रकृति ' सात्विक ' थी। वैदिक शिक्षा का स्वरूप बहुत व्यापक था। यह शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास हेतु प्रयासरत थी। अतः इसका वृहद् उद्देश्य था-संपूर्ण तथा बहुआयामी व्यक्तित्व का विकास करना।

संदर्भ

[1] शर्मा, के.एल. (2006), भारतीय सामाजिक संरचना एवं परिवर्तन, रावत प्रकाशन, नई दिल्ली. पृष्ठ, 23.

[2] श्रीवास्तव,के.सी, (2007), प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति, युनाटेड बुक डीपो, प्रयागराज, पृष्ठ, 766.

[3] लाल,रमन बिहारी,(2015), भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ, आर,एल,बुक डिपो, मेरठ, पृष्ठ,2.

[4] वहीं,पृष्ठ,3.

[5] श्रीवास्तव,के.सी, (2007), प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति, पृष्ठ, युनाटेड बुक डीपो, प्रयागराज,763.

[6] वहीं, पृष्ठ,764.

[7] वहीं, पृष्ठ,765.

[8] Chaturvedi, Diewedi, Dr. Arun Kumar, Dr. Vandana ,(2023), Vaidik Shiksha, Sanskriti Aur Sahitya, Nikhil Publishers & Distributo,New Delhi.p.123.

परिचय- डॉ प्रवीण पाठक, इतिहास विभाग, स्टारेक्स विश्वविद्यालय, गुरुग्राम, हरियाणा में सहायक प्रोफ़ेसर के पद पर कार्यरत है। महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,वर्धा से एमफिल और पीएचडी की उपाधि प्राप्त की है। उन्होंने महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ से मध्यकालीन इतिहास में एम.ए. किया है। इसके अलावा उन्होंने इग्नू से इतिहास, गांधी अध्ययन और हिंदू अध्ययन में एम.ए. किया है। उन्होंने भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद से इतिहास में जे.आर.एफ प्राप्त किया है। उन्होंने इतिहास में नेट और सेट (महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़) परीक्षा उत्तीर्ण की है। उन्हें तीन वर्ष से अधिक का शिक्षण अनुभव है।

Copyright © JURJ

उनकी दो पुस्तके प्रकाशित हो चुकी है। तथा कई शोध पत्र प्रकाशित हो चुके है। उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्र मध्यकालीन और आधुनिक इतिहास, गांधी अध्ययन और राष्ट्रीय एवं सामाजिक आंदोलन हैं।

Copyright © JURJ